सदानंद कवीश्वर

ई-मेल-kavishwars@gmail.com

दुम हिलाने का फायदा

हाउसिंग सोसाइटी के बीच बने पार्क में वर्मा जी का भूरे रंग का पालतू कुत्ता और उसका दोस्त काले रंग का गली का कुत्ता दोनों खेल रहे थे। बीच-बीच में वहाँ बने हुए बेंच के पास बैठकर बतिया भी रहे थे। वर्मा जी के कुत्ते ने पूछा, "और सुनाओ, कालू कैसे हो ?"

"बस भूरे, तुम सुनाओ।"

"अरे वाह, तुमने मेरा ये बढ़िया नाम रखा है, वैसे भी घर में मुझे चाहे किसी नाम से बुलाते हों, तुम्हारा रखा ये नाम मुझे बहुत पसंद है।"

"हाँ, पर यार, आज तुम एकदम मस्ती में अकेले खुले कैसे घूम रहे हो?"

"अरे, अकेला कहाँ, वो देखो, मालिक का छोटा बेटा बैठा तो है, वहाँ बेंच पर। दरअसल मुझे भी उसके साथ घूमने आना ही अच्छा लगता है, क्योंकि वो मुझे पार्क में लाकर मेरा पट्टा खोल देता है और ख़ुद बेंच पर बैठ अपने मोबाइल में मस्त हो जाता है। तभी तो मुझे मौका मिल जाता है, तुमसे जी भर के बात करने का।"

"अच्छा, पर भूरे, ये बताओ, मैं तुम्हें जब भी देखता हूँ, तुम दुम हिलाते रहते हो, और जो भी दिखता है, उसके पैर चाटने लगते हो, एसा क्यों?"

"इसके पीछे एक राज़ है कालू, मैंने एक दिन अपने मालिक को मालकिन से ये कहते सुना था कि 'हमारे ऑफिस वाले भाटिया जी का प्रमोशन इस बार भी नहीं हुआ जबकि वो बहुत काम करते हैं, अनुशासन और लगन में भी आगे हैं और वो गुप्ता जी जिन्हें कुछ नहीं आता उनका 4 साल में ये दूसरा प्रमोशन हुआ है इस बार।' जानते हो कालू, जब मालकिन ने पूछा कि ये तो बड़ी अजीब बात है कि जो काम नहीं करता वो फायदे में है; ऐसा क्यों?' तो मालिक बोले, 'अरे काम नहीं करता तो क्या उसे दुम हिलाना और पैर चाटना तो अच्छी तरह आता है न ?' बस, तभी से मैंने भी सोच लिया—फायदे में रहना है तो ये दोनों काम...।"

तभी वर्मा जी के बेटे ने आवाज़ दी और उनका कुत्ता अपने दोस्त कालू को छोड़, दुम हिलाता हुआ लपककर उसकी तरफ दौड़ पड़ा।

गुरु-मंत्र

सदानंद कवीश्वर

आज गिरगिटों के कॉलेज में दीक्षांत समारोह था। सबको डिग्रियाँ दी जा चुकी थीं। प्रधान गिरगिट मंच पर बने पोडियम तक पहुँची और कहने लगी, "प्यारे छात्रो, आप सबकी मेहनत तथा सफलता की प्रतीक यह डिग्री आपको मिल चुकी है। अब मैं मनुष्य-योनि से विशेष रूप से आमंत्रित महान नेता श्री बदलूराम जी से निवेदन करती हूँ कि वे आएँ और आपको विशेष गुरुमंत्र दें।"

तालियों की गडगडाहट के बीच सफ़ेद वस्त्रधारी नेता बदलूराम जी होंठों पर मधुर मुस्कान लिए मंच पर पहुँचे तथा छात्रों को संबोधित करते हुए कहने लगे, "यहाँ उपस्थित सभी गिरगिट छात्र-छात्राओं को मैं उनके सफल होने पर बधाई देता हूँ। प्रधान गिरगिट जी के अनुरोध का सम्मान करते हुए गुरुमंत्र के रूप में यही कहना चाहता हूँ कि यदि आप गिरगिट योनि से उठकर मनुष्य योनि तक आना चाहते हैं तो आपके कोर्स में जो रंग बदलने की विद्या का उपयोग संकट के समय अपनी सुरक्षा के लिए करना सिखाया गया है उसमें केवल इतना जोड़ लीजिये कि संकट या सुरक्षा के साथ-साथ आपको जब कभी अपना लाभ अथवा स्वार्थ सिद्ध होने का अवसर दिखे तब और भी प्रभावशाली ढंग से रंग बदलिये। फिर आपके जीवन में सुख ही सुख होगा सफलता कदम चूमेगी। धन्यवाद!"

तालियों की गडगडाहट के साथ बदलूराम जी मुस्कुराते हुए मंच से उतर आए।

सफलता-सूत्र

"हूँ... मिस्टर भारत! आज आपको यहाँ कार्यभार संभालना है न?"

"जी, आप से काम की जानकारी लेने भेजा गया है।"

"पानी में उतरेंगे तो तैरना आ ही जाएगा।"

"जी।"

"एक बात जो आपको हमेशा याद रखनी है वह सुन लीजिये और समझ भी लीजिये।"

"जी।"

"आपकी नियुक्ति खेल-कोटा में हुई है न, तो हर काम खेल-भावना से करिए।"

"जी, समझ गया।"

"क्या समझे ?"

"सब काम खेल-भावना से करना है अर्थात काम मन लगाकर करना है, पूरी लगन होनी चाहिए, जीतने का संकल्प होना चाहिए, असफल होने पर हताश होने के स्थान पर पुनः प्रयत्न करना है और जीत के प्रति दृढनिश्चय करके काम करना है।"

"नहीं, मैं बताता हूँ, खेल-भावना क्या होती है। कौन-से खेल में रुचि है आपकी?"

"जी, टेबल-टेनिस...।"

"सामने से सर्विस आती है तो क्या करते हैं?"

"कुशलता से लौटा देता हूँ।"

"फिर बॉल पलटकर आए तो ?"

"फिर लौटा देता हूँ।"

"और जितनी बार आती है बॉल, उतनी बार उसे अपने पाले में न गिरने देते हुए लौटा देते हैं।"

"जी।"

"बस, यही खेल-भावना है और यही आपको करना है, फिर वो चाहे बॉल हो या फाइल!!!"